FREEMIND

Date

Page

यूनिवर्सल कॉन्वेंट सीनियर सेकेण्डरी स्कूल कालादुंगी

विषय- संस्कृत

कक्षा - 7

नोट- निम्नलिखित सभी कार्य को अपनी संस्कृत की कॉपी में लिखिए.

प्रथमः पाठः सुभाषितानि

शब्दार्थाः

पृथिव्याम्	पृथ्वी पर
सुभाषितम्	सुन्दर वचन
मूढैः	मूर्खों के द्वारा
पाषाणखण्डेषु	पत्थर के टुकड़ों में
रत्नसंज्ञा	रत्नका नाम
विधीयते	किया / समझा जाता है
धार्यते	धारण किया जाता है
तपते	जलता है
वाति	बहता है/ बहती है
वायुश्च	पवन भी
प्रतिष्ठितम्	स्थित है
तपसि	तपस्या में
शौर्ये	बल में
नये	नीति में
विस्मयः	आश्चर्य
बहुरत्ना	अनेक रत्नों वाली

Scanned with CamScanner

FREEMIND

वसुन्धरा	पृथिवी
सद्भिरेव (सद्भिः + एव)	सज्जनों के साथ ही
सहासीत	साथ बैठना चाहिए
कुर्वीत	करना चाहिए
सद्भिर्विवादम्	सज्जनों के साथ झगड़ा
क्षमावशीकृतिर्लोके	संसार में क्षमा
(क्षमावशीकृतिः + लोके)	(सबसे बड़ा) वशीकरण है
नासद्भिः	असज्जन लोगों के साथ नहीं
धनधान्यप्रयोगेषु	धनधान्य के प्रयोग में
संग्रहेषु	संग्रहों में, संचय करने में
त्यक्तलज्जः	संकोच या भीरुता को छोड़ने वाला
शान्तिखड्गः	शान्ति की तलवार

निम्नलिखित श्लोकों को अर्थ सहित लिखिए

① पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥1॥

अर्थ– पृथ्वी पर तीन रत्न हैं- पानी, अनाज, सुन्दर वचन मूर्खों के द्वारा पत्थर के टुकड़ों को रत्नों का नाम दिया जाता है।

② सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥2॥

Scanned with CamScanner

अर्थ- पृथ्वी सत्य के द्वारा धारण की जाती है, सूर्य सत्य के द्वारा तपता है और हवा सत्य के द्वारा बहती है, सबकुछ सत्य पर ही स्थित है।

③ दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये।
विस्मयो न हि कर्त्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा ॥3॥

अर्थ- दान, तपस्या, वीरता, विज्ञान, नम्रता और नीति में आश्चर्य नहीं करना चाहिए क्योंकि पृथ्वी अनेक रत्नों वाली है।

4) सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम्।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत् ॥4॥

अर्थ- सज्जनों के साथ ही बैठना चाहिए, सज्जनों के साथ ही संगति और झगड़ा और मित्रता करनी चाहिए, दुष्ट व्यक्ति या असज्जन के साथ कुछ भी नहीं करना चाहिए।

5- धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ॥5॥

अर्थ- धन और अनाज के प्रयोग में विद्या के संग्रह में भोजन में और व्यवहार में संकोच को छोड़ देने वाला सुखी होता है।

6) क्षमावशीकृतिर्लोके क्षमया किं न साध्यते।

शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः, ॥6॥

अर्थ — संसार में क्षमा सबसे बड़ा वशीकरण है क्षमा से क्या सिद्ध नहीं किया जा सकता है अर्थात् सबकुछ सिद्ध किया जा सकता है, जिसके हाथ में शान्ति की तलवार हो उसका दुर्जन व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।

प्रश्न - उत्तर

1- पृथिव्यां कति रत्नानि?
उत्तर- पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि

2- मूढैः कुत्र रत्नसंज्ञा विधीयते?
उत्तर- मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।

3- पृथिवी केन धार्यते?
उत्तर- पृथिवी सत्येन धार्यते।

4- कैः सङ्गतिं कुर्वीत?
उत्तर- सद्भिः सङ्गतिं कुर्वीत।

5- लोके वशीकृतिः का?
उत्तर- लोके वशीकृतिः दमया।

6- कुत्र विस्मयः न कर्त्तव्यः

FREEMIND

Date

Page

उत्तर- दाने, तपसि शौर्ये, विज्ञाने नये च विस्मयो न कर्त्तव्यः।

7 पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि कानि?

उत्तर- पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलम् अन्नं च सुभाषितम् सन्ति।

8. त्यक्तलज्जः कुतः सुखी भवेत्।

उत्तर- धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।

Scanned with CamScanner